National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019; 1(23): 32-35
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

रोमन उमरे
शोध छात्रा,संस्कृतपालि एवं प्राकृत-विभाग,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

Correspondence:
रोमन उमरे
शोध छात्रा,संस्कृतपालि एवं प्राकृत-विभाग,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

वाल्मीकि रामायण एवं बालरामायण: एक तुलनात्मक अध्ययन

(राम विवाह के सन्दर्भ में)

रोमन उमरे

"विवाह मानव समाज की एक सर्वव्यापी व्यवस्था है। यह एक पवित्र बन्धन है। विवाह के माध्यम से गृहस्थ धर्म के दायित्वों को पूरा करना यह प्रत्येक हिन्दू के लिए धर्मशास्त्र द्वारा आवश्यक माना गया है, ताकि वह सामाजिक एवं पैतृक ऋणों से मुक्ति पा सके। विवाह के अन्तर्गत पुत्र-प्राप्ति को आवश्यक माना गया है, जिससे धर्म के कार्य को पूरा किया जा सके एवं अंत में मोक्ष प्राप्ति की जा सके। यह विवाह ऐसा पवित्र बन्धन है तो सम्पूर्ण जीवन पर्यन्त चलता है, तथा जिसको एकाएक तोड़ना संभव नही है। अतः हिन्दू विवाह जीवन के अन्तिम लक्ष्यों एवं पूर्णता प्राप्त करने का माध्यम है।"[1]

"रामायण काल में यद्यपि स्वयंवर प्रथा थी तथा कभी-कभी अन्तर्जातीय विवाह भी होते थे। सीता का स्वयंवर लोक प्रसिद्ध था परन्तु सामान्यतः कन्या पितृवंश होती थी। वे माता-पिता की इच्छानुसार विवाह करती थी। स्वयंवर में भी माता-पिता की इच्छा आवश्यक होती थी। और विवाह विशेष परिस्थितियों में होते थे जो कि निंद्य नही माने जाते थे। माता पिता की आज्ञा के विरूद्ध किया गया विवाह उचित नही माना जाता था। जैसा कि पितृवशां कन्याओं के द्वारा कहा गया है - "यस्मै नो दास्यति पिता सो न भर्ता भविष्यति।" गान्धर्व विवाह एवं प्रणय विवाह वर्णित थे और हेय दृष्टि से देखे जाते थे। विवाह में ज्योतिष एवं शुभ लक्षणों पर गहन विचार किया जाता था। नारी का मुख्य कर्त्तव्य गृहस्थ विधियों का संपादन करना ही था अतएव वह गृहणी बनकर ही इन सब कार्यों का भली-भाँति सम्पादन करती थी। समाज जिस प्रकार 'रामायण' नैतिक आदर्शों का भंडार है, उसी प्रकार वह एक महत्वपूर्ण मानवी समाज-शास्त्र भी है, जो सहस्त्रों वर्ष पूर्व के भारतीय आर्यों के जीवनयापन की विधियाँ का सुस्पष्ट वर्णन करता है। रामायण का कथानक तो लोक प्रसिद्ध है ही, इसके द्वारा कवि ने राम जैसे मर्यादा पुरूषोत्तम का तथा सीता जैसे आदि शक्ति का परम अनुकरणीय लोकानुरंजन चित्र प्रस्तुत किया है।"[2]

वाल्मीकि रामायण राम विवाह का प्रारम्भ विश्वामित्र अपने शिष्यों सहित जनकपुर जाते है। और प्रभात काल आने पर धर्मात्मा राजा जनक ने अपने नित्य नियम पूरा करके श्री राम और लक्ष्मण सहित महात्मा विश्वामित्र जी को बुलाया और शास्त्री विधि अनुसार मुनि तथा उन दोनों महामनस्वी राजकुमारों का पूजन करके इस प्रकार कहा - **"ततः प्रभाते विमले कृतकर्मा नराधिपः ..... राघवौ च महात्मानौ तदा वाक्यं मुवाच है।"**[3]

महाराज! राजा दषरथ के ये दोनों पुत्र विष्वविख्यात क्षत्रिय वीर हैं और आपके यहाँ जो यह श्रेष्ठ धनुष रखा है उसे देखने की इच्छा रखते हैं - **"पुत्रौ दशरथस्येमौ क्षत्रियौ लोकविश्रुतौ।"**[4]

आपका कल्याण हो, वह धनुष इन्हें दिखा दीजिये। इससे इनकी इच्छा पूरी हो जायेगी। फिर ये दोनो राजकुमार उस धनुष के दर्षनमात्र से संतुष्ट हो, तथा इच्छानुसार अपनी राजधानी को लौट जायेंगे। मुनि ऐसा कहने पर राजा जनक महामुनि विष्वामित्र से बोले मुनिवर! इस धनुष का वृत्तान्त सुनिये जिस उद्देश्य से यह धनुष यहां रखा गया, वह सब बताता हूँ। भगवन् निमिके ज्येष्ठ पुत्र राज देवरात के नाम से विख्यात थे। उन्ही महात्मा हाथ में यह धनुष धरोहर के रूप में दिया गया था। एक दिन वे यज्ञ के लिये भूमि शोधन करते समय खेत में हल चला रहा था उसी समय हल

के अग्रभाग से जोती गयी भूमि (हराई या सीता) से एक कन्या प्रकट हुई। सीता (हल द्वारा खींची गयी रेखा) से उत्पन्न होने के कारण उनका नाम सीता रखा गया। पृथ्वी से प्रकट हुई वह मेरी कन्या क्रमषः बढ़कर सयानी हुई। अपनी इस अयोनिजा कन्या के विषय में मैंने यह निश्चय किया कि जो अपने पराक्रम से इस धनुष को चढ़ा देगा उसी के साथ मैं इसका ब्याह करूँगा। इस तरह इसे वीर्यषुल्का (पराक्रम रूप शुल्क वाली) बनाकर अपने घर में रख छोड़ा है। मुनिश्रेष्ठ भूतल से प्रकट होकर दिनोदिन बढ़ने वाली मेरी पुत्री सीता को कई राजाओं ने यहाँ आकर माँगा। परन्तु भगवान कन्या वरण करने वाले उन सभी राजाओं को मैंने यह बता दिया कि मेरी कन्या वीर्यशुल्का है। उचित पराक्रम प्रकट करने पर ही कोई पुरूष उसके साथ विवाह करने का अधिकारी हो सकता है। यही कारण है, कि मैंने आज तक किसी को अपनी कन्या नहीं दी, मुनिपुंगव तब सभी राजा मिलकर मिथिला में आये और पूछने लगे कि राजकुमारी सीता प्राप्त करने के लिये कौन-सा पराक्रम निष्चित किया गया है। मैंने पराक्रम की जिज्ञासा करने वाले उन राजाओं के यह शिव का धनुष रख दिया परन्तु वे लोक इसे उठाने या हिलाने में भी समर्थ न हो सके तब मेरे द्वारा अपना तिरस्कार हुआ मानकर उन श्रेष्ठ नरेशों के अत्यन्त रूप हो, मिथिलापुरी को सब ओर से पीड़ा देना प्रारम्भ कर दिया। फिर तो हमारे सैनिकों की मार खाकर वे सभी पांपीचारी राजा जो बलहीन थे अथवा जिनके बलवान् होने में सन्देह था, मंत्रियों सहित भागकर विभिन्न दिशाओं में चले गये। मुनि श्रेष्ठ! यही वह परम प्रकाशमान धनुष है। उत्तमव्रत का पालन करने वाले महर्षि! मैं उस श्रीराम और लक्ष्मण को भी दिखाऊँगा और मुने! यदि श्रीराम इस धनुष की प्रत्यञ्चा चढ़ा दे तो मैं अपनी अयोनिजा कन्या सीता को इन दषरथ कुमार के हाथ में दे दूँ। जनक की यह बात सुनकर महामुनि विष्वामित्र बोले राजन्! आप श्रीराम को अपना धनुष दिखाइये। लोहे की वह संदूक, जिसमें रखा गया था लाकर उन मंत्रियों ने देवपमराजा जनक से कहा- ब्रह्मन् यही वह श्रेष्ठ धनुष है जिसका जनक वंशी नरेशों ने सदा ही पूजन किया है, तथा वो इसे उठाने में समर्थ न हो सके उन महापराक्रमी नरेशों ने भी इसका पूर्वकाल में सम्मान किया है। तब महर्षि की आज्ञा से श्रीराम ने जिसमें वह धनुष था उस संदूक को खोलकर उस धनुष को देखा और कहा-अच्छा अब मैं इस दिव्य एवं श्रेष्ठ धनुष में हाथ लगाता हूँ। मैं इसे उठाने और चढ़ाने का भी प्रयत्न करूँगा। तब राजा और मुनि ने एक स्वर से कहा - हाँ ऐसा ही करो। मुनि की आज्ञा से रघुकुलनन्दन धर्मात्मा श्रीराम ने उस धनुष को बीच पकड़कर प्रत्यञ्चा चढ़ा दी, उस समय कई हजार मनुष्यों की दृष्टि उन पर लगी थी। तभी प्रत्यञ्चा चढ़ाकर महायषस्वी नर श्रेष्ठ श्रीराम ने ज्यों ही उस धनुष को कान तक खींचा त्यों ही वह बीच से ही टूट गया। **"आरोपयित्वा मौर्वी च पूरयामासे तत्दनुः। हदू बभञ्च धनुर्मध्ये नरश्रेष्ठों महायथाः।"**[5]

भगवन्! मैं दशरथ नन्दन श्री राम का पराक्रम आज अपनी आँखो से देख लिया। महादेव जी के धनुष को चढ़ाना यह अत्यन्त अद्भुत अचिन्त्य और अंतर्कित घटना है। इस प्रकार मेरी पुत्री सीता दशरथ कुमार श्रीराम पति रूप में प्राप्त करके जनक वंष की कीर्तिका विस्तार करेगी।

"जनकानां कुले कीर्ति माहरिष्यति में सुता। सीता भर्तामासाध रामं दषरथात्मजम्।[6]

और मेरी पुत्री सीता कुशिकनन्दन मैंने सीता को वीर्यशुल्का (पराक्रम रूपी शुल्क से प्राप्त होने वाला) बताकर जो प्रतिज्ञा ली थी, वह आज सत्य एवं सफल हो गयी। सीता मेरे लिए प्राणों से भी बढ़कर है। अपनी यह पुत्री मैं श्रीराम को समर्पित करूँगा। - **"मम सत्या प्रतिज्ञा सा वीर्यशुल्केति कौशिक। सीता प्राणैर्बहुमता देय रामाय में सुता।"**[7] ब्रह्मन्! कुशिक नन्दन आपका कल्याण हो यदि आपकी आज्ञा हो तो मेरे मन्दी रथ पर सवार होकर बड़ी उतावली के साथ षीघ्र ही अयोध्या को जाये और विनय युक्त वचनों द्वारा महाराज दशरथ को मेरे नगर में ले आये। साथ ही यहाँ का सब समाचार बताकर यह निवेदन करे कि जिसके लिये पराक्रम का ही शुल्क नियत किया गया था, उस जनक कुमारी सीता का विवाह श्रीराम चन्द्र जी के साथ होने जा रहा है। विश्वामित्र ने तथास्तु कहकर राजा की बात का समर्थन किया। तब धर्मात्मा राजा जनक ने अपनी आज्ञा का पालन करने वाले मंत्रियों को समझा - बुझाकर यहाँ का ठीक-ठीक समाचार दशरथ को बताने और उन्हें मिथिलापुरी में ले आने के लिये भेज दिया। राजन् आप को मेरी पहले की हुई प्रतिज्ञा का हाल मालूम होगा। मैंने अपनी पुत्री के विवाह के लिये पराक्रम का ही नियत किया था। उसे सुनकर कितने ही राजा अमर्श में भरे हुए आये। किन्तु यहाँ पराक्रम ही न सिद्ध हुए और विमुख होकर घर लौट गये। नरेश्वर! मेरी इस कन्या को विश्वामित्र जी के साथ अकस्मात् घूमते आये हुए आपके पुत्र श्रीराम ने पराक्रम से जीत लिया है। राजेन्द्र! यहाँ पधारकर आप मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करे। यहाँ आने से आपको अपने दोनों पुत्रों के विवाह जनित आनन्द की प्राप्ति होगी। - **"प्रतिज्ञां मम राजेन्द्र निर्यतयितुर्महसि। पुत्रयोरूभयोरेय प्रीतिं त्वमुपलप्स्यते।।"**[8]

यह सुनकर समस्त महर्षियों सहित मंत्रियों ने बहुत अच्छा कहकर एक स्वर चलने की सहमति दी। राजा बड़े प्रसन्न हुए और मंत्रियों से बोले कल सबेरे यात्रा कर देनी चाहिये।

महाराजा दशरथ के सभी मंत्री समस्त सद्गुणों से सम्पन्न थे। राजा ने उनका बड़ा सत्कार किया। अतः बारात चलने की बात सुनकर उन्होंने बड़े आनन्द से वह रात्रि व्यतीत की। तदनन्तर रात्रि व्यतीत होने पर उपाध्याय और बन्धु बान्धवों सहित दशरथ हर्ष में भरकर सुमन्त्र से इस प्रकार बोले- आज हमारे सभी धनाध्यक्ष बहुत साधन लेकर नाना प्रकार के रत्नों से सम्पन्न होकर सबसे आगे चले उनकी रक्षा के लिये हर तरह की सुव्यवस्था होनी चाहिए। सारी चतुरंगिणी से ना भी यहां से शीघ्र ही कुच कर दे अभी मेरी आज्ञा सुनते ही सुन्दर-सुन्दर पालकियाँ और अच्छे-अच्छे घोड़े आदि वाहन तैयार होकर चल दें। राजा की इस आज्ञा के अनुसार चतुरगिणी सेना तैयार होगी और ऋशियों के साथ यात्रा करते हुए महाराज दशरथ के पीछे-पीछे चले। तत्पश्चात् आनन्दमग्न हुए राजा जनक बूढ़े महाराज दशरथ के पास पहुँचे उनसे मिलकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। हे नरश्रेष्ठ नरेन्द्रः कल सबेरे इन सभी महर्षियों के साथ उपस्थित हो, मेरे यज्ञ की समाप्ति के बाद आप श्रीराम के विवाह का षुभकार्य सम्पन्न करें। - **श्वः प्रभाते नरेन्द्र त्वं संवर्तपितुमर्हसि। यज्ञस्यान्ते नरश्रेष्ठ विवाहमृशिसन्तमैः।** [9]

राजा जनक का अपने भाई कुशध्वज को सांकाश्या नगरी से बुलवाना, राजा दशरथ के अनुरोध से वशिष्ठ जी का सूर्यवंश का परिचय देते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के लिये सीता तथा उर्मिला को वरण करना है। नरश्रेष्ठः नरेश्वरः इसी इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न हुए

श्रीराम और लक्ष्मण के लिये मैं आपकी दो कन्याओं का वरण करता हूँ। ये आपकी कन्याओं के योग्य है। और आपकी कन्याएं इनके योग्य। अतः आप इन्हें कन्यादान करें - **"रामलक्ष्मणयोरथे त्वत्सुते वरये नृप सदृशाभ्यां नरश्रेष्ठ सदृशे दातुमर्हसि।** [10]

और राजा जनक का अपने कुल का परिचय देते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के लिये क्रमशः सीता और उर्मिला को देने की प्रतिज्ञा करना महाराज आपका भला हो, मैं सीता को श्रीराम के लिये और उर्मिला को लक्ष्मण के लिये समर्पित करता हूँ। पराक्रम ही जिसको पाने का शुल्क (शर्त) था, उस देव कन्या के समान सुन्दरी अपनी प्रथम पुत्री सीता को श्रीराम के लिये तथा दूसरी पुत्री उर्मिला को लक्ष्मण के लिये दे रहा हूँ। मैं इस बात को तीन बार दुहराता हूँ। इसमें संशय नही है। मुनिप्रवर! मैं पर सम्पन्न होकर आपको दो बहुएं दे रहा हूँ।

सीता रामाय भदं ते ऊर्मिला लक्ष्मणाय वै ..... ददामि परमप्रीतो वथ्वौ ते मुनिपुगंव।[11]

वशिष्ठजी से ऐसा कहकर राजा जनक ने महाराज दशरथ से कहा- राजन् अब आप श्रीराम और लक्ष्मण के मंगल के लिये इनसे गोदान करवाइये आप का कल्याण हो नान्दीमुख श्राद्ध का कार्य भी सम्पन्न कीजिये इसके बाद विवाह का कार्य आरम्भ कीजियेगा।

रामलक्ष्मणयों राजन् गोदानं कारस्व ह। पितृकार्य च भद्रं ते ततो वैवाहिकं कुरू।[12]

उपर्युक्त विवेचन से यह प्रतीत होता कि वाल्मीकिजी द्वारा राम विवाह एक प्राचीन परम्परा के सामाजिक पद्धति द्वारा प्रतिपादित व्यवस्था थी, जो बड़े सुनियोजित ढंग से प्रतिपादित किया गया था।

महाकवि राजशेखर महाराष्ट्र की यायावर नामक जाति के क्षत्रिय थे। महाराष्ट्र चूड़ामणि के कविवर अकालजलद इनके दादा तथा दुर्दुक पिता और माता षीलवती थी।[13] अवन्ति सुन्दरी नाम की एक चैहान हुआ। जाति की विदुषी महिला के साथ इनका विवाह हुआ था। राजशेखर ने एक स्थान पर 'पाक' से सम्बन्धित उनका मत दिया है। कन्नौज नरेष के यहाँ से धन तथा यष कमाने के इरादे से आये तथा सफलता के रूप में इन्हें महेन्द्रपाल या निर्भयराज की सभा में सभा पंडित का स्थान प्राप्त हुआ। बालरामायण से विदित होता है कि राजशेखर ने छह प्रबन्धों की रचना की थी।[14] राजशेखर ने 'बालरामायण' की नवमी षताब्दी के अन्त अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ[15] में लिखा होगा। 'बालरामायण में रामायण की कथा विस्तार के साथ निबद्ध की गई है।[16] इस के दस अंको में सीता स्वयंवर सेलेकर रामभिषेक तक की कथा भवभूति तथा मुरारि के अनुकरण पर वर्णित है।[17] फिर भी कथानक की दृष्टिकोण से राजशेखर ने मौलिकता का भी प्रदर्षन किया है। राजशेखर का पाण्डित्य काव्य क्षेत्र में बहुत बड़ा था। वे अपने को वाल्मीकि, भर्तृमेण्ठ और भवभूति का अवतार मानते है।[18] रावण स्वयं प्रहस्त के साथ सीता के स्वयंवर में पहुँच कर धनुष परीक्षा करना अस्वीकार करता है, तथा सीता के पति का अपना शत्रु घोशित कर लौटता है।[19] द्वितीय अंक (राम रावणीय) में परषुराम तथा रावण के परस्पर कलह का वर्णन है। रावण ने अपने सेवक मायामय को परषुराम के पास उनके परषु को मांगने के लिए भेजा था।[20] इस प्रस्ताव से ही परषुरामजी आगबबूला होकर रावण को खरी-खोटी सुनाते हैं और दोनों में परस्पर नोक-झोंक होती है। रावण सीता की अप्राप्ति से नितान्त खिन्न है और इसलिए उसके मनोविनोद के निमित्त 'सीता-स्वयं वरण' गर्भनाटक का प्रदर्षन किया जा रहा है।[21] इस नाटक में ही राम के साथ सीता का विवाह शिवधनु के तोड़ने के अनन्तर होता है।[22]

गर्भांट में 'कोहल' सूत्रधार, काम वन्दना परक नान्दी गाकर रावण की नाट्यशाला देखते हुए आश्चर्य करते है। नेपथ्य से राम लक्ष्मण के साथ विश्वामित्र की प्रवेश सूचना दी जाती है। विश्वामित्र, दोनों राजकुमारों को जनक का अद्भुत वैराग्य बतलाते हुए स्वयंवरभूमि में ले आते है। शतानन्द ने भी जनक से तेजस्वी राम का परिचय कराया। रावण ने सर्वप्रथम इसी प्रेक्षणक में स्वाभिमानी राम को देखा। सीता को देखकर राम सस्पृह हो रहे थे। प्रतीहार ने जनक की शर्त सुनाई कि शिव धनुष को जो चढ़ा देगा, मैथिली उसी की स्त्री होगी। राजा धनुष उठाने की चेष्टा करने लगे।

स्वकुन्तं वर्णयत्येष कुन्तविधाविशारदः। [23]

पहले कामरूप का राजा धनुष चढ़ाने के लिए उठा, परन्तु षंकर की याद आते ही बैठ गया। समुद्रवंशी पाण्डदेश का राजा धनुष उठाकर भी असमर्थ होने के कारण प्रणाम करके बैठ गया। सहस्त्रार्जुन का पुत्र माहिष्मतीपति धनञजय रावण की भाँति अपनी भुजाओं के योग्य शिवधनुष न समझकर उठा ही नही। कीर्तिशाली चेदिपति धनुष देखकर, अभिमानवष अपने बाहुओं को सहलाता रह गया। प्रख्यात युद्ध विजयी सिंहलेश्वर एवं मथुरापति उदासीन रह गये। अवन्तिपति तथा क्रथकैशिक के राजा धनुष चढ़ाने का प्रसंग आने पर क्रमषः मित्रों से बात तथा अपनी गदा की प्रषंसा करने लगे। काञचीपुर का राजा स्वयंवर में इन्द्राणी-शाप की उपेक्षा करके सीता को बलात्ः पकड़ने की चेष्टा करता हुआ राजाओं द्वारा क्रोधपूर्वक देखा गया। लाटेश्वर ने धनुष की धूल झाड़ने के बहाने हाथ लगाया पर तथ्य समझकर लौट गया। राजा ने धनुष की डोरी पकड़ी पर न चढ़ा सका और न छोड़ा ही। अन्त में पौण्ड्र, मगध, कम्बोज, सौराष्ट्र, नेपाल तथा आन्ध्र प्रान्तों के राजा एवं शकराज मिलकर धनुष चढ़ाने के लिए उठते है। कुछ तो आदर से धनुष को नमस्कार करते हैं, तथा अन्य बोझ से दबकर भूमि पर गिर पड़ते है। प्रतीहार राम को पुकारता है, तथा सूर्यवंष का संक्षिप्त वर्णन करता है। राम, धनुष की प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करते हुए उठाकर चढ़ाने लगते हैं। धनुष के चढ़ जाने एवं टूटने पर जनक, सपरिवार प्रसन्न होते है तथा सीता का पाणिग्रहण कराते है। प्रेक्षणक देखता रावण, झेंपकर राम को मारने की पुरानी प्रतिज्ञा दुहराता है। वह सीता की याद करता हुआ राम के प्रति वैर बाँध लेता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह प्रतीत होता है कि वाल्मीकी और राजशेखर के इस राम विवाह में एक आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। जो एक अनुकरणीय पथ प्रदर्शक है।

सन्दर्भग्रन्थसूची –

1.भारत की शक्ति के स्त्रोत - सम्पादक डॉ. सुरेश दन्त, पृ.सं. 265-66

2.चैखम्बा प्रतियोगिता - प्रकाशक, अंजना शर्मा, पृ.सं. 6.7, 6.11

3.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 66-1, 2

4.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 67-17

5.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 67-22

6.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 67-23

7.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 68-12

8.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 69-12

9.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 70-45

10.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 71-21, 22

11.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 71-23

12.वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड, 71-24

13.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य कमल नारायण टण्डन द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.सं. 89

14.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य वाचस्पति गैरोला द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.सं. 692

15.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य विनय कुमार राय द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.सं. 377

16.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य गोविन्द देवशास्त्री द्वारा मूलमात्र सम्पादित, काषी से प्रकाशित सन् 1869

17.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य फादर कामिल बुल्के द्वारा रचित रामकथा, पृष्ठ सं. 162

18.वभूव वल्मीकभवः कविः पुरा ततः प्रपेदे भुवि भतृमेष्ठताम। स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।

19.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य राजशेखर द्वारा रचित बालरामायण अंक-1

20.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य राजशेखर द्वारा रचित बालरामायण 2/22

21.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य राजशेखर द्वारा रचित बालरामायण अंक-3

22.विशिष्ट विवरण हेतु द्रष्टव्य आचार्य बलदेव उपाध्याय द्वारा रचित संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ.सं. 56

23.बालरामायण - सम्पादक डॉ. भास्कराचार्य त्रिपाठी, पृ.सं. 116-52